

१११ शुचि पिण्ड विधि

ASHA ARCHIVES 3092















|   |     |       |      |     |    |
|---|-----|-------|------|-----|----|
| ॐ | नमो | भगवते | सर्व | देव | ता |
| ॐ | नमो | भगवते | सर्व | देव | ता |
| ॐ | नमो | भगवते | सर्व | देव | ता |
| ॐ | नमो | भगवते | सर्व | देव | ता |

श्रीगणेशायः॥ ॥ अथ सुचि चित्तविधिः॥  
 ततः पूजनं॥ ॥ ॐ नमो भगवते सदा सिद्धि  
 दायकं सनमो नमो नमो॥ ॥ ॐ नमो भगवते  
 नमो नमो नमो नमो नमो नमो नमो नमो



जनने वद्यधूप दीप ॥ इदं फलपुष्पाति ॥  
सोत्र ॥ ॐ कुरु कर्पूरसंकाशने कवकं त्रि  
लोचनं ॥ पंचदकलाश्राटे पूरणं कुं जनमो  
सुते ॥ सर्वज्ञो ये मया मन्त्रिर्दुःश्रेष्ठस्तृतीय

के ॥ नमामि सततं न कृत्या सर्वज्ञो वेङ्गार  
गाः ॥ दिधि दिधि हर्षेव त्रिभुक्तिं नवतार  
गाः ॥ श्यामारताधिवर्णा पुणामा मिसदा  
नियं ॥ ॐ नमो नमो न विद्वेति ॥ ॥ ति



लकुसैन आसतंदयार ॥ ॥ ॐ ह्रीं ती यं क  
ला आदि इदमासनं सुपति कृतां ॥ स्वं ॥  
हृती यं कला ॥ चतुर्थं पंचमं षष्ठं  
सिद्धं अष्टमं नवमं दशमं

सकादसं द्वादशं त्रयोदशं चान्न  
सिद्धं कुनमासिकं पितृप्राजासमं  
पीनं च रानं ॥ लोको जिह्वं पतं ॥ प्रियं  
पात्रं हृती ॥ ॐ शुभं सर्वं फलं ॥ सं पं न



सुसंघं तं ॥ पिशा नहं करिष्ये ॥ कुरु ॥  
वाक्य ॥ ॐ द्विती कला साहस्ये सतत्पि रात  
स्ये उपतिष्ठतां ॥ स्वदं वाक्ये न ॥ चंदनादि  
प्रत्यादि ॥ पूषदीप इदं पत्रा ॥ सौत्रा ॥ पंच

सकला श्राद्धे पिशां दया <sup>श</sup> विवागृता ॥ सर्वपापवि  
निर्मुक्तं मित्रलो मगकृति ॥ पंचदसकलाश्रा  
द्धे अर्चन विवेति ॥ विसर्जने ॥ ॐ कुरु कुरु  
गमसदा सिद्धाय स्वस्थान दायो नयमा ॥



पिरा विर्जतं ॥ ॐ पंचदशकला पिरा  
स्तेन्यः स्वस्था वा सो नयंतु ॥ ज ज मा ने ॥ ॐ पि  
रा मुस्था य मा मि ॥ वा ह ने न ॥ ॐ पिरा मुस्था  
प या मि ॥ पिरा व य ॥ ॐ स प वा । धा नि ॥ ह स्ता मा

प्रक्षाल्य ॥ ॐ ये चा स्मा कं कु ले ज्यते त्यादि ॥  
कु ने श्वा स्था ने क्षि पे त ॥ पिरा वी य ॥  
वा ह रा मो ह रु ये माल ॥ इति श्रुति पिरा  
वि धि ॥ ॥ स १६४ मा - म्ये २४५ ३ तं



ति २

सकल २६४ साल मिति ज्येष्ठ वदि ६ रो ५  
धूम्र फूसु नानं सुया ये कल सा. कौंडा ज  
रा या कौ. तिदे यता या हत्या लो क मि  
शयला क ज्येष्ठ व निह्न स्या ॥ ॥ ॥

१ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॥ प्रेत पितृ विधि  
विस्थिते ॥ जाधुयद्वन्द्वे नदे दकुड विस्थिते  
मि विकदलसाया गलन जाधुय माल ॥ स्त्री श्री  
जा श्री स्त्री सि समे यदु पाद जाधुय ॥ ॥ ॥



अथ शिव त्वं ज्ञाय ॥ ॥ शिव पूजा ॥ का वरुन के  
तेने ॥ ॐ जल पात्र इदं मा सतं त्वया दीयतां ॥  
ॐ क्षील पात्र इदं मा सतं त्वया दीयतां ॥ ॐ जल  
धारा पात्र इदं मा सतं त्वया दीयतां ॥ के लं स्व

हिलं कते ॥ ॐ जल पात्र इदं मा सतं त्वया दीयतां ॥  
ॐ क्षील पात्र इदं मा सतं त्वया दीयतां ॥ शिव पूजा  
के तने ॥ ॐ हाट के पात्र इदं मा सतं त्वया दीयतां ॥  
जाय प्रेता विपतये इदं मा सतं त्वया दीयतां ॥ ॐ



14/12/15

14/12/15

ASHA ARCHIVES  
3092



वैष्णवीयेन ॥ जलस्नानं क्षीरस्नानं यमधारशुद्धी  
लक्ष्मं क्षीरस्नानं पंचाहृतस्नानं जलस्नानं च  
व्रतसिद्धययत्रोपवीत अक्षयपुष्प-पी  
तचूर्णं लालाफलस्योन्नपक्वान् एष कौत  
नैवद्युधुपं दीप ॥ इदं फलपुष्पतांति ॥ स्तोत्र

ॐ श्रीगुरुर्वागमनं प्रपूजितं चैव सदैव  
पुत्रकाले च सं प्रपूजितं चैव सदैव  
यमाय वमराशाय प्रपूजितं चैव सदैव  
वृषभनाथकालासं सर्वलोककल्याणाय  
विदुः स्वराय नीलाय रक्षापरमेश्वरे ॥ वृ



कोदराय चित्राय चित्रगुप्ताय ते नमः ॥ हातके  
खरदेवस्य नित्यपूजा परायणाः ॥ पातले का  
निकपाय धर्मता धाय वै नमः ॥ हातके श्व  
यर्च विधी तस्यै विधिपरि पूरा मस्तु ॥ इति  
हातके श्वरपूजा ॥ अथ पिराये ॥ जलपात्र

क्षीलपात्र यमश्वरा पात्र के तने ॥ ॐ नमः  
ब्रह्ममासनं त्वया दीयतां ॥ नृवं वा क्यतः ॥  
क्षीरपात्र यमश्वरा पात्र ॥ के लं रय हिरके ते ॥  
नलपा. क्षी पात्र यमश्वरा पात्र रुषी र्य पात्र  
परि रं त्वया दीयतां ॥ पशु वा सन वीय ॥



सपतेलायके ॥ आसनतय ॥ ॐ पुथमे मूर्द्धी दि  
सं सिद्धौ प्रेताय पुन पिशाचयुग्ममासनं त्वया  
यतां ॥ पिशाचपात्रवासे ॥ वाक्य ॥ ॐ काक स्नानमसे  
पंचपंचा मृत वलि स्मृतः ॥ इदं पिशां मया दत्तं न  
क्षायामुपतिष्ठतां ॥ पुथमे मूर्द्धी दि सं सिद्धौ प्रेता

यपुन पिशां त्वया दीयतां ॥ तिलोदक ॥ ॐ पितृ  
तिलोदकार्यं च तिला घासंगमं संयुताः ॥ तेन पि  
पिशां मया दत्तं सिवलोके समकृति ॥ ॐ पुथमे मूर्द्धी  
दि सं सिद्धौ तिलोदकार्यं त्वया दीयतां ॥ एवं  
नलक्ष्मीलं पंचामृतं एवं नल चंदनं सीद



रयजोपवीत. पुष्प. पीतकुरा. लाजा. फल  
पकान. एवकात्रनेवशादिइदं फलं ताम्रलासि  
खात्र॥ प्रेतपितररूपानि मोक्षार्थं कर्मसो पिव ॥  
साहेन कृतं कर्म स्वर्गं गच्छति मानसात् क्वचि  
त्रैतन्भावेन हातये श्वरस्या गुणः॥ सर्वं पिरां

मयादत्तं सिलोके संगच्छति॥ प्रेतपिरा मस्य  
पानां पंचा मृतैर्न पूरितं॥ गृहं नृपेत रूपे न  
पिरां चैव न मोक्षते॥ केनने॥ प्रेतपिरा चैव न वि  
ष्टेति॥ बुद्धो मया कथं॥ जलोदक. क्षालोदक  
व्यापीयतां॥ ते नि नं धुन दत्तौ न के वाप्य॥ ॐ धे



के विष्टेतरूपे नै बन्नने पिगरः स्मृताः ॥ ते सर्वे  
नृपिमायां ति ति लाया मधु मि श्रिता ॥ पिराम  
ति स्मिय ॥ वस्त्रोदकं त्वया दीयतां ॥ ॐ पिराम  
प्रीता वरदा नंदतु ॥ वेदपुत्रतपुः जगत्पिराम  
ते ॥ सुप्रीतं त्वया दीयतां ॥ पिराम ते हि धं ह्यु

धारे ॥ फिहु कुहु रिपुं तय ॥ पिराम ते यै के वा  
के ॥ ॐ पापानिपु रायानि पुरा कृता निमं ह  
त्यपापानि दिव्य पुयानि ॥ एतानि कु त्या ज  
स विन्दु पात्रैः श्री गौर धिर्वा शरत्तं पु यां  
ति ॥ स्वा ॥ मे स्यं मोद ह्यु ग हि



यं च धे ॥ वाक्चक्रुको वि शेष ॥ ॐ  
हि तैय सुख ना सि का दि सं सि द्वौ ॥ ॐ  
तीये च क्रु श्रोत्रा दि सं सि द्वौ ॥ ॐ चतुर्थे  
वाक्चक्रु यो ग ल दि सं सि द्वौ ॥ ॐ पंचमे  
ह ना मि सं सि द्वौ ॥ ॐ षष्ठे षट्चक्रु यो ग ल

दि सं सि द्वौ ॥ ॐ सप्तमे सप्तमां स सत्रायु सं सि  
द्वौ ॥ ॐ अष्टमे अष्ट च लो ना दि सं सि द्वौ ॥ ॐ नवमे  
सर्वांग सं सि द्वौ ॥ ॐ दसमे दश लि पा सं सि  
द्वौ ॥ जिह्व नो यो ध पे वा क त्रे द ॥ पत वा स  
न वा य ना य हो ले ॥ त प ते ला य ॥ कु स हा







पृथक् न मे व श्रुः शुक्रदिक् इदं कलनांम  
लफलासकं सति द्विरस्तुः स्तोत्रं इन्द्र  
वारुणायापयो याम्या नैकैः यवायसाः  
॥ वापसाप्रति गृह्णतु भूमौ सत्तल्लि  
ता नृरे ॥ नमिन्नभावं न च सत्तु भावं ख

वर्णितं महिस्वाप्तनस्थं सध्वप्रष्ठरूपं  
वलदरादपाणि श्रीचर्मैराजाय नमो  
स्तुतस्मै ॥ चर्मैराजस्वरूपेण स्वानरु  
पं चरन्निच ॥ नरकं प्रेत मूढिषु खान  
स्य नमोस्तुते ॥



अथादि ॥ अमुकजोत्रस्य अमुकनाम्नप्रेतत्वमु  
क्तिपूर्वकस्वर्गलोकसम्प्राप्तीकामः ॥ ईमामसर्वा  
म् वस्वप्रच्छतां मपोतरीं शसयनासनम् ॥  
स्वदेवापरिसुसंयुक्तं देवतं विष्णुमव्ययम्  
कन्दुकं चोत्तरीयं च उष्णीषं मङ्गलवस्त्रं पादभु  
षणं वस्त्रं च वा ईश्वर्यं सुदेवतं ॥ उपानयनं केशसं

स्कारमुत्तानां जीरमपरः ॥ कर्तनं भक्षपानं  
न्यपानं पात्रं च पाकरम् ॥ विश्वकर्मा विदेव  
तं जलकुम्भं ववरुणदेवतम् शकारश्चक्र  
उषं तपुः संमथजनातिच ॥ अनामया वि  
देवतं स्वामपाना नानेकशतान्मुलादीनि च



वाराणसी मुख्यालय देवकी



